डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग, भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 06.04.2021

पत्र : चतुर्थ/ छायावादोत्तर हिन्दी कविता (का शेष)
'कलगी बाजरे की' ... का शेष।

...फिर वे कहते हैं ——

नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है।
बल्कि केवल यही :
ये उपमान मैले हो गये हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है। — V.V.I

~~उक्त कवि कहते हैं कि~~ अज्ञेय प्रेम और सौन्दर्य जैसे शाश्वत विषयों को भी पुरानी शब्दावली के बदले नयी शब्दावली में कहना चाहता है। इन पंक्तियों में अज्ञेय अपनी प्रेयसी से कहते हैं कि मैं पारंपरिक कवियों की तरह तुम्हें पुराने उपमानों से संबोधन या प्रशंसा नहीं करना चाहता हूं। इसका कारण यह नहीं की मैं तुमसे प्यार नहीं करता या कम करता हूं बल्कि यह है कि अब उस पुराने उपमानों और प्रतीकों में वह बात नहीं रही। अगर अब मैं तुम्हें पहले की तरह, शरद के भोर में ओस से नहायी टटकी कली के समान या फिर, साँझ के आकाश में लजाती अकेली तारिका नहीं कहना चाहता हूं। इसका कारण यह नहीं है कि मेरा हृदय तुम्हारे प्रेम से ऊब चुका है। या, मेरा हृदय में तुम्हारे प्रेम के लिए कोई जगह नहीं। ~~बल्कि मैं पूरे विश्वास~~ या फिर मेरा प्यार मैला हो गया है। बल्कि मैं पूरे विश्वास से कहता हूं कि मेरे प्यार की शुद्धता, पवित्रता, या तीव्रता में कोई कमी नहीं आयी है बल्कि यह और गहरा और पवित्र हो गया है। जिस कारण मैं तुम्हें पुराने उपमानों या प्रतीकों से हटकर नवीन उपमानों और प्रतीकों से संबोधन या प्रशंसा करना चाहता हूं। क्योंकि मुझे उन उपमानों और प्रतीकों का प्रयोग जँचता ही नहीं है। वह मुझे अब तुम्हारे सामने श्रीहीन और तुच्छ लगने लगे हैं। अर्थात मुझे लगता है कि ये उपमान मैले हो चुके हो, जो सर्वथा तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं हैं। इसी प्रकार तुम्हारे सौन्दर्य को व्यक्त करने वाला प्रतीक अब मुझे उसमें जीवन्तता नहीं दिखती। लगता है उन प्रतीकों में जो पूर्व में

प्राण के देवता थे वे कूच कर गये हैं। जिस प्रकार बर्तन को अधिक मांजने से उसका ऊपरी चमकीला परत (मुलम्मा) छूट जाता है और वह अपनी सुंदरता खो देता है ठीक उसी प्रकार ये उपमान और प्रतीक भी पूर्व के प्रेमियों द्वारा अधिक उपयोग करने के कारण उसकी सुंदरता नष्ट हो गयी हैं। अत: इनके सहारे मुझे तुम्हारे रूप और प्रेम का प्रशंसा करना अच्छा नहीं लगता।